



**पणजी-गोवा।** सेल्फ मैनेजमेन्ट ट्रेनिंग के बाद ग्रुप फोटो में कदम्बा ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन गवर्नमेन्ट ऑफ गोवा के डेप्युटी जनरल मैनेजर घाटे साहब, ब्र.कु.सुरेखा, ब्र.कु.निरजा तथा अन्य।



**पिलुवा-नेपाल।** वृक्षारोपण के पश्चात् वन अधिकृत एसोसिएशन संघ के अध्यक्ष अमरदेव यादव, राजकुमार अर्याल एवं ब्र.कु.मैया।



**पीथमपुर-इन्दौर।** व्यसन मुक्ति अभियान उद्घाटन करते हुए एस.पी.विक्रम सिंह, टी.आई.दुबे, ब्र.कु.सुनिता तथा ब्र.कु.वीका।



**पूणे।** कार्यक्रम में मंच पर ब्र.कु.सरिता, डॉ.श्रीमन्त साहू, प्रताप रावजी पवार तथा अशोक जैन।



**राजकोट।** ब्रह्माकुमारीज एवं पंचशील स्कूल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'ट्राफिक समस्या जागृति' सेमिनार में उपस्थित पुलिस कमिश्नर एच.पी.सिंह, आर.टी.ओ.इन्स्पेक्टर जे.वी.शाह, ब्र.कु.अंजु, डॉ.वाडोदरीया, बच्चे तथा अन्य।



**वारंगल-शिव नगर।** नवीन सेवाकेन्द्र निर्माण हेतु भूमि पूजन में उपस्थित आन्ध्र प्रदेश के मंत्री बी.सारय्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला एवं ब्र.कु.श्रीलता। साथ हैं डिप्युटी मेयर वाय.रविन्द्र, ब्र.कु.सविता, ब्र.कु.शशीधर तथा अन्य।

## विश्व कल्याण का ... -पेज 1 का शेष

प्राकृतिक है और यहाँ हर ओर आध्यात्मिकता पसरी हुई है। हम अगर अपने मन का सकारात्मक परिवर्तन करना चाहते हैं तो इसे अच्छी तरह समझना जरूरी होगा। हमें देहाभिमान से आत्माभिमान की स्थिति में जाना होगा। मन के बारे में हमें मेडिकल की कक्षाओं में नहीं बताया गया। इसके बारे में अच्छी रीति समझने के लिए यह एक उत्तम स्थान है। मन को समझकर हम बीमारियों को ही नहीं बल्कि उसके कारणों को भी समाप्त कर पाएंगे। बीमारियों से बचे रहने के लिए व्यायाम के साथ साथ ध्यान की भी अत्यंत आवश्यकता होती है।

मेडिकल विंग के उपाध्यक्ष डॉ प्रताप मिड्डा ने कहा कि व्यसन मुक्ति के बिना सर्वांगीण स्वास्थ्य की कल्पना नहीं कर सकते। इसके लिए पहले चिकित्सकों को रोल मॉडल बनना होगा। तनाव मुक्ति के लिए ध्यान का अभ्यास परमावश्यक है। गलत जीवन पद्धति के कारण ही बीमारियाँ होती हैं। जीवन शैली में परिवर्तन करके हम इनसे मुक्त हो सकते हैं। ग्रामीण भारत के लोगों को शिक्षित करके हम उन्हें अनेक बीमारियों से बचा सकते हैं। शाकाहार एवं सकारात्मक चिंतन एक कारगर दवा है। डॉक्टरों को स्वास्थ्य प्रदाता के रूप में जाना जाए, ऐसा प्रयास करें।

एम्स के सीटीवीटी प्रभाग के विभागाध्यक्ष डॉ बलराम ऐरन ने कहा कि हमें रोगियों का सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी सुधारने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। हमें खुद को निमित्त मानकर अपना कार्य संपन्न करना चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के निर्देश पर ही यह सब कर रहे हैं। सकारात्मकता सफलता की गारंटी है।

मेडिकल विंग की संयुक्त सचिव ब्र.कु.डॉ निरंजना ने कहा कि आपको यहाँ एक नये आयाम अर्थात् ध्यान के बारे में जानने का मौका मिलेगा। अपने विचारों में परिवर्तन से जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। मगर इसके लिए आंतरिक शक्ति चाहिए। इस स्थान की आध्यात्मिकता एवं प्राकृतिक सौंदर्य आंतरिक बल प्राप्त करने में काफी मददगार होगा।

मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ बनारसी लाल साह ने अतिथियों का स्वागत किया तथा विंग के संगठन सचिव डॉ गिरीश पटेल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## जनकल्याण के... -पेज 12 का शेष

प्रेरणादायी बनेगा। आज के युवाओं के लिए यह एक मिसाल है। मनुष्य का साथ तो कभी भी छूट सकता है परन्तु परमात्मा का साथ हमेशा और हर पल रहता है। उन्होने उनके परिवारजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह सुखद है कि इन बहनों के माता-पिता ने खुशी से अपनी बेटियों को इस मार्ग के लिए स्वीकृति देकर अलौकिक कन्यादान किया है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि भारत में ऐसे ही महान कार्यों के कारण नारी को शक्ति और दुर्गा का अवतार माना गया है। यदि विश्व में ऐसी युवा बहनें यह संकल्प लें कि नया मूल्यनिष्ठ समाज बनाना है तो निश्चित ही पूरा विश्व बदल जायेगा।

संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व में एकमात्र ऐसी संस्था है जिसकी बागडोर बहनों और माताओं के हाथ में है। संस्था के ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्ष ब्र.कु.मोहिनी, अति.सचिव ब्र.कु.रमेश, सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.भूपाल व ब्र.कु.आत्मप्रकाश ने भी विचार व्यक्त किए।

**समर्पण का महत्व -** ब्रह्माकुमारी संस्था में जो आजीवन समाज सेवा की शपथ लेते हैं उनका समर्पण करवाया जाता है। समर्पण के बाद वे शिव परमात्मा के बताए मार्ग पर चलेंगे और उन सभी नियमों का पालन करेंगे जो संस्था द्वारा निर्धारित हैं। समर्पण से पूर्व खुद की स्वेच्छा, माता-पिता के सहमति पत्र और स्थानीय सेवाकेन्द्र की बहनों की स्वीकृति लेनी होती है। बहनों को पहले साप्ताहिक कोर्स कराकर उन्हें आत्मा, परमात्मा और कर्म की गहन गति के बारे में जानकारी दी जाती है। कोर्स के बाद कम से कम एक या दो साल संस्था का नियमित विद्यार्थी होने के बाद कम से कम दो साल संस्था का नियमित विद्यार्थी होने के पश्चात् उन्हें टीचर्स ट्रेनिंग दी जाती है। जो माउण्टआबू मुख्यालय में तीन मास की होती है। फिर उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए देश में किसी भी सेवाकेन्द्र की मुख्य बहनों के सानिध्य में रखा जाता है। ईश्वरीय ज्ञान के कम से कम पांच वर्ष पूरे होने के बाद उन्हें समर्पण के योग्य समझा जाता है।

## कमजोरी के संस्कार को त्यागें

जैसे आजकल की दुनिया के अंदर हम ये बात बार-बार सुनते हैं कि कई व्यक्ति कहते हैं कि हम गुस्सा करना चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाता है। तो ये बात क्या सिद्ध करती है? कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ, क्रोध करना चाहता नहीं हूँ लेकिन क्रोध आ जाता है अर्थात् वो प्रकृति, वो संस्कार उसको मजबूर कर रहा है। गुस्सा करने के लिए तो इस प्रकार कमजोरी के संस्कार हमें अपनी तरफ खींचेंगे और मजबूर करेंगे। जो कमजोरी के संस्कारों के वश जीवन जीता है, उसकी गति क्या हो सकती है, वह नष्ट हो जायेगा। वो परमात्म कृपा को अनुभव नहीं कर पाता है। इसलिए हे भारत, यहां अर्जुन को भारत क्यों कहा गया, क्योंकि एक अर्जुन की बात नहीं है, सारे भारतवासी अर्जुन हैं। इसलिए हे भारत, सभी भारतवासी संपूर्ण भाव से उस ईश्वर की शरण ग्रहण करो, उसकी कृपा से परम शांति को प्राप्त करो और इस प्रकार अपनी कमजोरी के जो संस्कार हैं, स्वभाव है, उसको खत्म कर दो, ताकि वो हमें मजबूर न करें प्रवृत्त होने के लिए। उसी के साथ भगवान कहते हैं इस प्रकार ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए कहा है। इसलिए मैं तेरे हित के लिए कहूंगा। भगवान यहां दोस्ती का भाव व्यक्त करता है और कहते हैं - तू मेरा मित्र है, अति प्रिय है इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् तेरी जैसी इच्छा हो वैसा करना। इतना कहकर भगवान भी न्यारा हो जाता है। इतनी अच्छी ज्ञान की बात सुनाने के बाद भी हमारे ऊपर वह थोपने का प्रयास नहीं करता है कि तुम्हें मेरी बात को मानना ही चाहिए - नहीं। कितनी निर्माणता व्यक्त करते हैं। वे हमें सिखाने का प्रयत्न करते हैं। ये गुह्य गोपनीय ज्ञान मैंने तेरे लिए ही कहा है, क्योंकि तू मेरा अति प्रिय

## गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



है। इसलिए मैं तुम्हें हित की बात ही कहूंगा। परंतु फिर भी इस पर पूर्ण विचार करने के पश्चात् ही जैसी तेरी इच्छा हो, वैसा करना। इतना न्यारा, निराला है परमात्मा।

फिर भगवान कहते हैं कि मेरा चिंतन करने से, मेरा अनन्य भक्त बनने से तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे, ये मेरा वचन है। भगवान भी वचनबद्ध हो जाता है। कितना सुंदर ये एक आश्वासन मिलता है कि अगर हम ईश्वर का चिंतन करेंगे, उसके अनन्य भक्त बन जायेंगे, तो निश्चित ही ईश्वर के पास चले जायेंगे। ये भगवान का वचन है, हमारे लिए। इसलिए हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग अर्थात् जो अनेक हृद के धर्म में आ गये हैं कि ये मेरा धर्म है, ये तेरा धर्म है, या इस प्रकार की भावनाओं में हम जो आ गये हैं, तो सर्व धर्म का परित्याग करके, तुम मेरी शरण में आ जाओ। इससे श्रेष्ठ धर्म और कोई नहीं है।

धर्म माना जो हमें श्रेष्ठ आचरण करना सिखाए, धर्म माना जो जीवन में श्रेष्ठ धारणा करना सिखाए, ये है सच्चा धर्म। बाकी धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा देना ये कोई धर्म नहीं है। इसलिए भगवान कहते हैं तुम सर्व धर्म का परित्याग करके मेरी शरण में आ जाओ, तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। ये भी भगवान का वचन हम आत्माओं के प्रति है। सब दैहिक धर्म को छोड़कर एक ही धर्म हमारा है कि मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और परमात्मा की संतान होने के नाते मेरे कर्म कैसे होने चाहिए, मेरी विचार धारा कैसी होनी चाहिए? मेरी जीवन की धारणायें कैसी होनी चाहिए? सब स्पष्ट हो जाती है।

जिस प्रकार एक राजा के बेटे को सिखाना नहीं पड़ता है कि तू राजा का बेटा राजकुमार है इसलिए तुम्हें कैसे चलना चाहिए? कैसे बोलना चाहिए? कैसे खाना चाहिए? कैसे व्यवहार करना चाहिए? सिखाया नहीं जाता है और यह सिखाने वाली बात नहीं है। लेकिन जैसे ही यह स्मृति अंदर में रहती है कि मैं राजा का बेटा राजकुमार हूँ। तो अपने आप वो संस्कार राजसी होने लगते हैं। अपने आप उसके हर बोल-चाल, व्यवहार, कर्म में वो राजसी भाव झलकने लगता है।